IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या गत्यात्मकता का तुलनात्मक अध्ययनः छतरपुर जिला

शोधार्थी – मूलचंद्र कुशवाहा

Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University,

Chhatarpur, Madhya Pradesh

शोध सारांश :– यह अध्ययन छतरपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या गत्यात्मकता के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। जनसंख्या गत्यात्मकता में जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवासन, जनसंख्या वृद्धि दर तथा आयु–संरचना जैसे प्रमुख घटक शामिल होते हैं, जो किसी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच जनसंख्या के व्यवहार, प्रवृत्तियों एवं परिवर्तन के पैटर्न को समझना है। शोध में द्वितीयक आंकड़ों (जनगणना रिपोर्ट, जिला सांख्यिकी पत्रिका आदि) तथा आवश्यकतानुसार प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि मुख्यतः उच्च जन्म दर एवं सीमित स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण अधिक होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम जन्म दर, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा स्तर के कारण जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित रहती है। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों में प्रवासन का प्रभाव अधिक दिखाई देता है, जहां रोजगार, शिक्षा एवं बेहतर जीवन–स्तर की तलाश में ग्रामीण जनसंख्या का आगमन निरंतर बढ़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में युवा वर्ग का पलायन एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में सामने आता है, जिससे वहां वृद्धजन अनुपात बढ़ रहा है और श्रमबल में कमी देखी जा रही है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व बढ़ने से आवास, परिवहन, जल आपूर्ति एवं पर्यावरणीय समस्याएं उभर रही हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि जनसंख्या गत्यात्मकता के विभिन्न आयामों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट असमानताएं विद्यमान हैं। अतः संतुलित क्षेत्रीय विकास, रोजगार के स्थानीय अवसरों का सृजन, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है, जिससे अनियंत्रित शहरीकरण को रोका जा सके और सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

संकेताक्षर :– जनसंख्या वृद्धि दर का तुलनात्मक विश्लेषण, जन्म दर एवं मृत्यु दर, प्रवास प्रतिरूप, जनसंख्या संरचना, सामाजिक–आर्थिक प्रभाव।

प्रस्तावना :– जनसंख्या किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार होती है। जनसंख्या गत्यात्मकता से आशय जनसंख्या में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवासन तथा जनसंख्या वृद्धि से है। ये तत्व न केवल किसी क्षेत्र की जनसंख्या संरचना को निर्धारित करते हैं, बल्कि उसके विकास की दिशा और गति को भी प्रभावित करते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच जनसंख्या संबंधी विशेषताओं में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत जीवनशैली, सीमित शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाएं, तथा कृषि पर निर्भरता के कारण उच्च जन्म दर और अपेक्षाकृत अधिक जनसंख्या वृद्धि पाई जाती है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में आधुनिक जीवनशैली, बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं एवं रोजगार के अवसरों के कारण जनसंख्या वृद्धि अपेक्षाकृत नियंत्रित रहती है, किन्तु यहां प्रवासन का प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है।

मध्य प्रदेश का छतरपुर जिला इस संदर्भ में एक उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र है, जहां ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की जनसंख्या संरचनाएं विद्यमान हैं। जिले में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर निरंतर प्रवासन हो रहा है, जिससे शहरीकरण की गति तेज हो रही है। यह प्रवृत्ति एक ओर जहां शहरी क्षेत्रों में संसाधनों पर दबाव बढ़ा रही है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी एवं सामाजिक–आर्थिक असंतुलन उत्पन्न कर रही है।

छतरपुर जिले की भौगोलिक स्थिति :– मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित छतरपुर जिला बुंदेलखंड क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह जिला भौगोलिक दृष्टि से विविधताओं से परिपूर्ण है, जो इसके प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप को प्रभावित

करती हैं। छतरपुर जिले का विस्तार लगभग 24°05' से 25°20' उत्तरी अक्षांश तथा 79°30' से 80°30' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। यह स्थिति इसे मध्य भारत के पठारी क्षेत्र में स्थापित करती है।

छतरपुर जिले की सीमाएँ उत्तर में उत्तर प्रदेश के महोबा एवं बांदा जिलों से, दक्षिण में दमोह एवं सागर जिलों से, पूर्व में पन्ना जिले से तथा पश्चिम में टीकमगढ़ जिले से मिलती हैं। इस प्रकार, यह जिला भौगोलिक रूप से विभिन्न सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों के संपर्क में स्थित है, जिससे इसके विकास पर बहुआयामी प्रभाव पड़ता है।

भू–आकृतिक दृष्टि से छतरपुर जिला मुख्यतः बुंदेलखंड पठार का हिस्सा है, जहां पर चट्टानी संरचना, असमतल स्थलाकृति एवं मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्र पाए जाते हैं। यहां की भूमि प्रायः ग्रेनाइट एवं बेसाल्ट शैलों से निर्मित है, जिसके कारण मिट्टी की उर्वरता कुछ स्थानों पर सीमित होती है। जिले में काली, लाल एवं दोमट मिट्टी पाई जाती है, जो कृषि के लिए अलग–अलग स्तर पर उपयुक्त है।

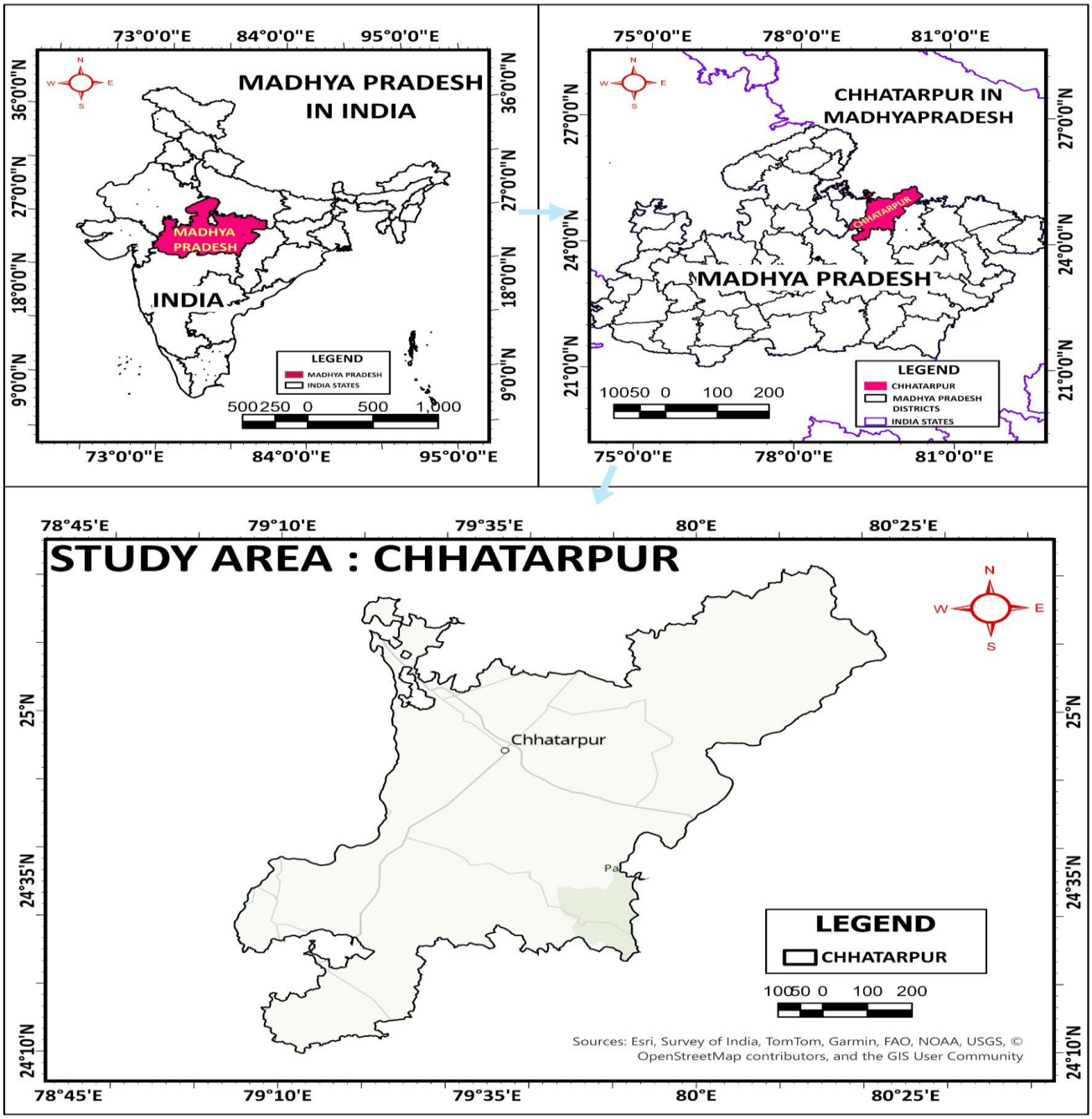

जलवायु की दृष्टि से छतरपुर जिला उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु क्षेत्र में आता है। यहाँ गर्मियों में तापमान अत्यधिक उच्च (45°C तक) हो जाता है, जबकि सर्दियों में यह 7°C तक गिर सकता है। वर्षा मुख्यतः दक्षिण–पश्चिम मानसून से होती है, जिसकी औसत वार्षिक मात्रा लगभग 800–900 मिमी के बीच रहती है। वर्षा की अनियमितता के कारण जिले में सूखे की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है, जो कृषि और जल संसाधनों को प्रभावित करती है। जल संसाधनों के अंतर्गत केन, धसान, उर्मिल एवं बेतवा जैसी नदियाँ जिले में प्रवाहित होती हैं। ये नदियाँ न केवल सिंचाई का प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि क्षेत्रीय पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वनस्पति की दृष्टि से यहाँ शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं, जिनमें सागौन, खैर, बबूल एवं नीम प्रमुख हैं। वन क्षेत्र

सीमित होने के बावजूद स्थानीय जैव विविधता को बनाए रखने में सहायक हैं। इस प्रकार, छतरपुर जिले की भौगोलिक स्थिति जिसमें इसकी स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी एवं जल संसाधन शामिल हैं। जनसंख्या के वितरण, आजीविका के साधनों एवं विकास की दिशा को गहराई से प्रभावित करती है।

1. जनसंख्या वृद्धि दर : तुलनात्मक विश्लेषण

जनसंख्या वृद्धि दर किसी क्षेत्र की जनसंख्या में एक निश्चित अवधि के दौरान होने वाले प्रतिशत परिवर्तन को दर्शाती है। छतरपुर जिले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की वृद्धि दर में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि मुख्यतः प्राकृतिक कारकों जन्म दर एवं मृत्यु दर पर निर्भर करती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में प्रवासन प्रमुख भूमिका निभाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक संरचना, कम शिक्षा स्तर एवं परिवार नियोजन के प्रति सीमित जागरूकता के कारण जन्म दर अपेक्षाकृत अधिक रहती है, जिससे जनसंख्या वृद्धि दर भी अधिक होती है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं जीवनशैली में बदलाव के कारण जन्म दर नियंत्रित रहती है, लेकिन बाहरी प्रवास के कारण कुल जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है। इस प्रकार, जहां ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि का आधार प्राकृतिक है, वहीं शहरी क्षेत्रों में वृद्धि का मुख्य आधार सामाजिक–आर्थिक आकर्षण (रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं) है। यह अंतर क्षेत्रीय असमानताओं को भी दर्शाता है और विकास नीतियों के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि :– ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण उच्च जन्म दर है। छतरपुर जिले के ग्रामीण भागों में पारंपरिक परिवार व्यवस्था, बाल विवाह की प्रवृत्ति तथा परिवार नियोजन साधनों की सीमित उपलब्धता के कारण जन्म दर अपेक्षाकृत अधिक बनी रहती है। साथ ही, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर में कमी आई है, जिससे प्राकृतिक वृद्धि दर में वृद्धि हुई है।

ग्रामीण समाज में बच्चों को आर्थिक संपत्ति के रूप में देखा जाता है, विशेषकर कृषि कार्यों में सहायक श्रमबल के रूप में। यही कारण है कि बड़े परिवार की प्रवृत्ति अभी भी प्रचलित है। हालांकि, हाल के वर्षों में शिक्षा के प्रसार एवं सरकारी योजनाओं के कारण जनसंख्या वृद्धि दर में धीरे–धीरे कमी के संकेत भी मिल रहे हैं। फिर भी, ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि का मुख्य आधार प्राकृतिक वृद्धि ही बना हुआ है, जो जनसंख्या दबाव एवं संसाधनों पर भार को बढ़ाता है।

शहरी क्षेत्रों में वृद्धि :– शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण प्रवासन है। छतरपुर जिले के नगरों में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं बेहतर जीवन स्तर की उपलब्धता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग यहां आते हैं। शहरी क्षेत्रों में जन्म दर अपेक्षाकृत कम होती है, क्योंकि यहां शिक्षा स्तर उच्च होता है तथा परिवार नियोजन के साधनों का अधिक उपयोग किया जाता है। इसके बावजूद, कुल जनसंख्या में तेजी से वृद्धि देखी जाती है, जिसका मुख्य कारण बाहरी जनसंख्या का आगमन है। इस प्रवासन के कारण शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बढ़ता है, जिससे आवास, यातायात एवं मूलभूत सुविधाओं पर दबाव बढ़ जाता है।

जनगणना आधारित परिवर्तन :– छतरपुर जिले में जनसंख्या वृद्धि के रुझानों को समझने के लिए विभिन्न जनगणना वर्षों 1991, 2001, 2011 तथा 2021 (अनुमानित) के आंकड़ों का विश्लेषण आवश्यक है। इस अवधि में शहरी क्षेत्रों में वृद्धि दर अधिक रहने की संभावना है, क्योंकि रोजगार एवं सुविधाओं के लिए प्रवासन लगातार बढ़ रहा है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि दर में और कमी आने के संकेत मिलते हैं, जो जनसंख्या संक्रमण के प्रारंभिक चरण को दर्शाता है।

क्र.सं.	वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि (प्रतिशत में)
01	1981	8,86,660	2.21 %
02	1991	11,58,076	2.71 %
03	2001	14,74,723	2.45 %
04	2011	17,62,375	1.80 %
05	2021 (अनुमानित)	19,46,922	1.40 %

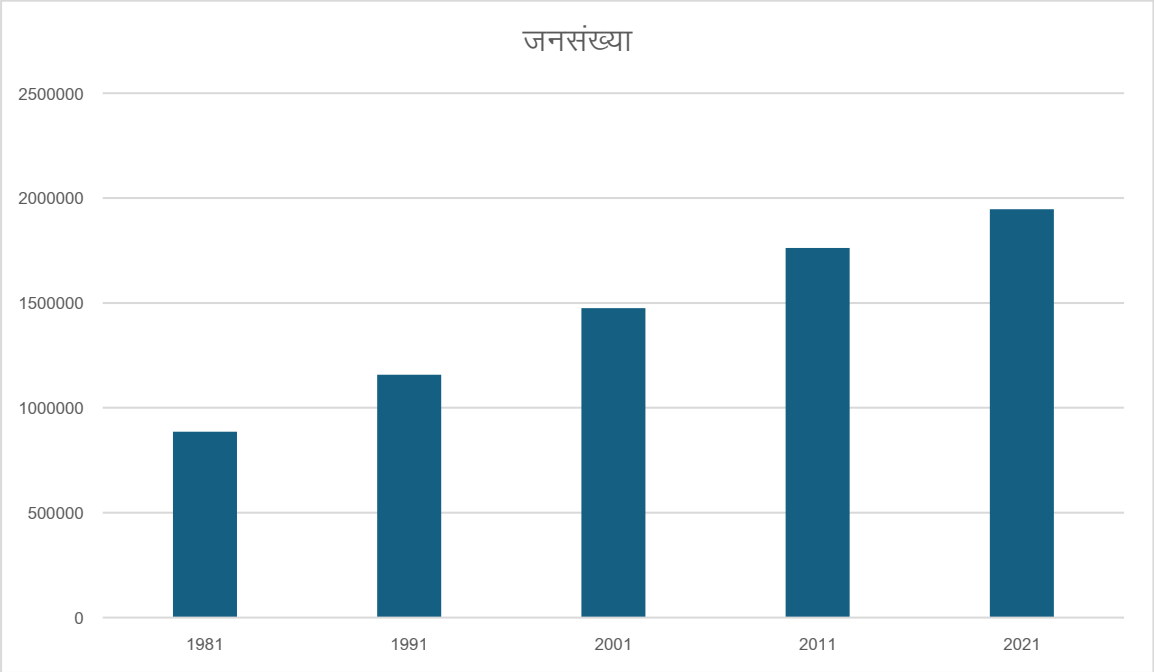

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि छतरपुर जिले में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप समय के साथ बदल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक वृद्धि का प्रभाव घट रहा है, जबकि शहरी क्षेत्रों में प्रवासन आधारित वृद्धि तेजी से बढ़ रही है। यह प्रवृत्ति भविष्य में क्षेत्रीय विकास की दिशा को प्रभावित करेगी।

2. जन्म दर एवं मृत्यु दर :–

जन्म दर एवं मृत्यु दर जनसंख्या गत्यात्मकता के प्रमुख सूचक हैं, जो किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि और संरचना को निर्धारित करते हैं। जन्म दर से आशय प्रति हजार जनसंख्या पर एक वर्ष में होने वाले जन्मों की संख्या से है, जबकि मृत्यु दर प्रति हजार जनसंख्या पर होने वाली मृत्यु की संख्या को दर्शाती है। छतरपुर जिले में इन दोनों दरों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर पाया जाता है। ये अंतर शिक्षा स्तर, स्वास्थ्य सुविधाओं, पोषण, स्वच्छता एवं सामाजिक जागरूकता जैसे कारकों से प्रभावित होते हैं और क्षेत्रीय विकास के स्तर को भी प्रतिबिंबित करते हैं।

जन्म दर एवं मृत्यु दर जनसंख्या परिवर्तन के मूल आधार हैं। इनके माध्यम से किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि, स्वास्थ्य स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति का आकलन किया जाता है। ये दोनों संकेतक विकास की दिशा और गुणवत्ता को समझने में सहायक होते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर एवं मृत्यु दर :– छतरपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2011 के आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में जन्म दर लगभग 26–30 प्रति हजार के बीच आंकी गई, जो शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। इसका मुख्य कारण पारंपरिक सामाजिक संरचना, कम शिक्षा स्तर, विशेषकर महिला शिक्षा की कमी तथा परिवार नियोजन के प्रति सीमित जागरूकता है।

ग्रामीण समाज में बच्चों को आर्थिक संपत्ति एवं वृद्धावस्था की सुरक्षा के रूप में देखा जाता है। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में अधिक श्रमबल की आवश्यकता भी उच्च जन्म दर को बढ़ावा देती है। साथ ही, बाल विवाह की प्रथा एवं कम आयु में विवाह होने से प्रजनन अवधि लंबी हो जाती है, जिससे कुल जन्मों की संख्या अधिक रहती है।

मृत्यु दर की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अपेक्षाकृत गंभीर है। 2011 के आसपास ग्रामीण मृत्यु दर लगभग 8–10 प्रति हजार आंकी गई, जो शहरी क्षेत्रों से अधिक है। इसका प्रमुख कारण स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, अस्पतालों की दूरी, प्रशिक्षित चिकित्सकों की अनुपलब्धता एवं चिकित्सा सुविधाओं तक सीमित पहुंच है।

शिशु मृत्यु दर (IMR) भी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है, जो लगभग 45–55 प्रति हजार जीवित जन्म तक दर्ज की गई। मातृ मृत्यु दर भी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होती है, जिसका कारण प्रसव के दौरान उचित चिकित्सा सुविधा का अभाव है। पेयजल की गुणवत्ता, पोषण की कमी, स्वच्छता का अभाव एवं संक्रामक रोगों का प्रभाव भी मृत्यु दर को बढ़ाते हैं। हालांकि, सरकारी योजनाओं जैसे आयुष्मान भारत, जननी सुरक्षा योजना एवं टीकाकरण कार्यक्रम के कारण मृत्यु दर में धीरे–धीरे कमी आ रही है। 2021 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण जन्म दर घटकर लगभग 22–25 प्रति हजार तक आ सकती है, जबकि मृत्यु दर 7–8 प्रति हजार के बीच रहने का अनुमान है।

शहरी क्षेत्रों में जन्म दर एवं मृत्यु दर :– छतरपुर जिले के शहरी क्षेत्रों में जन्म दर अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। 2011 के आंकड़ों के अनुसार शहरी जन्म दर लगभग 18–22 प्रति हजार के बीच रही, जो ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम है। इसका मुख्य कारण उच्च शिक्षा स्तर, विशेषकर महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में भागीदारी है। शहरी समाज में छोटे परिवार की अवधारणा अधिक प्रचलित

है। परिवार नियोजन के साधनों जैसे गर्भनिरोधक उपाय का व्यापक उपयोग जन्म दर को नियंत्रित करता है। विवाह की औसत आयु अधिक होने से प्रजनन काल छोटा हो जाता है, जिससे जन्म दर में कमी आती है।

मृत्यु दर की दृष्टि से शहरी क्षेत्रों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है। 2011 में शहरी मृत्यु दर लगभग 6–7 प्रति हजार दर्ज की गई, जो ग्रामीण क्षेत्रों से कम है। इसका प्रमुख कारण बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, अस्पतालों की उपलब्धता, प्रशिक्षित डॉक्टर एवं आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं हैं।

शिशु मृत्यु दर शहरी क्षेत्रों में लगभग 25–30 प्रति हजार के आसपास पाई जाती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में काफी कम है। नियमित टीकाकरण, पोषण स्तर में सुधार एवं स्वच्छता के बेहतर मानक मृत्यु दर को कम करने में सहायक हैं। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण, तनावपूर्ण जीवनशैली एवं गैर–संचारी रोग (जैसे हृदय रोग, मधुमेह) जैसी समस्याएं भी सामने आती हैं, लेकिन इनका प्रभाव नियंत्रित चिकित्सा सुविधाओं के कारण सीमित रहता है। 2021 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार शहरी जन्म दर घटकर लगभग 16–18 प्रति हजार तथा मृत्यु दर 5–6 प्रति हजार के आसपास रहने का अनुमान है।

3. प्रवास प्रतिरूप

प्रवास जनसंख्या गत्यात्मकता का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो किसी क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को प्रभावित करता है। यह ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर को स्पष्ट रूप से दर्शाता है और विकास के स्तर, अवसरों एवं संसाधनों की उपलब्धता का संकेतक होता है।

प्रवास का महत्व :– प्रवास (Migration) किसी व्यक्ति या समूह का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थायी या अस्थायी रूप से स्थानांतरण है। यह जनसंख्या गत्यात्मकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच असमानताओं को समझने में सहायक होता है।

छतरपुर जिले के संदर्भ में प्रवास मुख्यतः आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय कारणों से होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार अवसर, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, सिंचाई की कमी एवं बार–बार आने वाले सूखे जैसी समस्याएं लोगों को अपने मूल स्थान को छोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में बेहतर रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं एवं आधुनिक जीवनशैली लोगों को आकर्षित करती हैं। प्रवास के कारण न केवल जनसंख्या का वितरण बदलता है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक व्यवस्था एवं आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में युवा वर्ग के पलायन से श्रमबल की कमी उत्पन्न होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव बढ़ता है। इस प्रकार, प्रवास ग्रामीण–शहरी असमानताओं का दर्पण है और यह क्षेत्रीय विकास नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ग्रामीण से शहरी प्रवास :– छतरपुर जिले में ग्रामीण से शहरी प्रवास एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभरकर सामने आया है। यह प्रवास मुख्यतः रोजगार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की खोज में होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के सीमित अवसर, विशेषकर कृषि पर निर्भरता, लोगों को शहरों की ओर आकर्षित करती है।

- ❖ कृषि में अनिश्चितता, वर्षा पर निर्भरता एवं भूमि का विखंडन ग्रामीण युवाओं को वैकल्पिक रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने के लिए प्रेरित करता है। शहरों में उद्योग, व्यापार, निर्माण कार्य एवं सेवा क्षेत्र में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं, जो प्रवास का प्रमुख कारण बनते हैं।
- ❖ शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण कारक है। उच्च शिक्षा संस्थानों, तकनीकी कॉलेजों एवं प्रशिक्षण केंद्रों की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों में अधिक होती है, जिससे विद्यार्थी बेहतर भविष्य की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं।
- ❖ स्वास्थ्य सुविधाओं की दृष्टि से भी शहरी क्षेत्र अधिक विकसित होते हैं। अस्पताल, विशेषज्ञ डॉक्टर एवं आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरों में बेहतर उपलब्ध होती हैं, जिससे लोग चिकित्सा कारणों से भी प्रवास करते हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक प्रतिष्ठा, जीवनशैली में सुधार एवं आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता भी ग्रामीण से शहरी प्रवास को बढ़ावा देती हैं। हालांकि, इस प्रवास के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी एवं पारिवारिक संरचना में बदलाव देखने को मिलता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में भीड़भाड़, बेरोजगारी एवं झुग्गी–झोपड़ियों की समस्या बढ़ती है।

शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व :– ग्रामीण से शहरी प्रवास के परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व तेजी से बढ़ता है। छतरपुर जिले के नगरों में बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास, परिवहन, जल आपूर्ति एवं स्वच्छता जैसी मूलभूत सुविधाओं पर दबाव बढ़ गया है।

जनसंख्या घनत्व बढ़ने से शहरों में भीड़भाड़, यातायात जाम, प्रदूषण एवं पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं। सीमित संसाधनों पर बढ़ता दबाव जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, अनियोजित शहरीकरण के कारण झुग्गी–झोपड़ियों का विस्तार होता है, जहां रहने की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का विस्तार भी होता है, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। फिर भी, संतुलित शहरी विकास के लिए उचित योजना एवं संसाधनों का प्रबंधन आवश्यक है।

छतरपुर जिले में प्रवास के पैटर्न :– छतरपुर जिले में प्रवास के पैटर्न का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यहां आंतरिक (Intra-district) एवं बाह्य (Inter-state) दोनों प्रकार के प्रवास देखने को मिलते हैं। ये प्रवास विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होते हैं और जिले की जनसंख्या संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

1. आंतरिक प्रवास :– आंतरिक प्रवास से आशय जिले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जनसंख्या के स्थानांतरण से है। छतरपुर जिले में यह प्रवास मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है।

जिले के छोटे गांवों एवं कस्बों से लोग छतरपुर नगर, नौगांव, राजनगर आदि शहरी केंद्रों की ओर रोजगार एवं शिक्षा की तलाश में जाते हैं। यह प्रवास प्रायः अस्थायी एवं अर्ध–स्थायी होता है, जहां लोग कार्य के लिए शहरों में रहते हैं, लेकिन उनका पारिवारिक आधार गांव में बना रहता है।

महिलाओं का विवाह के कारण होने वाला प्रवास भी आंतरिक प्रवास का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त, कृषि कार्यों के दौरान मौसमी प्रवास (Seasonal Migration) भी देखा जाता है, जहां लोग अस्थायी रूप से अन्य क्षेत्रों में कार्य करने जाते हैं। आंतरिक प्रवास का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी एवं शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के रूप में देखा जाता है।

2. बाह्य प्रवास (Inter-state Migration) :– छतरपुर जिले से बाह्य प्रवास भी एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जहां लोग अन्य राज्यों या बड़े शहरों की ओर जाते हैं। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात जैसे राज्यों में रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध होने के कारण यहां के लोग वहां प्रवास करते हैं।

बाह्य प्रवास मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित होता है। जिले में औद्योगिक विकास की कमी एवं सीमित रोजगार अवसर लोगों को बड़े शहरों की ओर आकर्षित करते हैं। निर्माण कार्य, फैक्ट्री, होटल उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में काम करने के लिए बड़ी संख्या में लोग बाहर जाते हैं। शिक्षा के लिए भी छात्र बड़े शहरों जैसे भोपाल, इंदौर एवं दिल्ली की ओर जाते हैं। यह प्रवास अक्सर स्थायी रूप ले लेता है, जिससे जिले में प्रतिभा का पलायन (Brain Drain) होता है।

प्रवास के कारण :– छतरपुर जिले में प्रवास के प्रमुख कारणों में आर्थिक अवसरों की कमी, कृषि की अनिश्चितता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, तथा सामाजिक कारण शामिल हैं। सूखा एवं जल संकट भी प्रवास को प्रभावित करते हैं।

प्रवास के प्रभाव :– प्रवास के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रभाव होते हैं। सकारात्मक रूप में यह आर्थिक विकास एवं आय में वृद्धि को बढ़ावा देता है। प्रवासी लोग अपने गांवों में धन भेजते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। नकारात्मक प्रभावों में ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी, पारिवारिक विघटन एवं सामाजिक असंतुलन शामिल हैं। शहरी क्षेत्रों में भीड़भाड़, संसाधनों पर दबाव एवं पर्यावरणीय समस्याएं बढ़ती हैं।

छतरपुर जिले में प्रवास एक जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया है, जो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच संबंधों को दर्शाती है। आंतरिक एवं बाह्य प्रवास के पैटर्न यह स्पष्ट करते हैं कि विकास की असमानताएं प्रवास का मुख्य कारण हैं। अतः संतुलित क्षेत्रीय विकास, स्थानीय रोजगार सृजन एवं बुनियादी सुविधाओं के विस्तार द्वारा प्रवास की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

4. जनसंख्या संरचना

जनसंख्या संरचना से आशय किसी क्षेत्र की जनसंख्या के विभिन्न घटकों जैसे आयु संरचना, लिंग अनुपात, साक्षरता स्तर एवं कार्यबल संरचना से है। यह किसी भी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का दर्पण होती है। छतरपुर जिले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या संरचना में स्पष्ट अंतर देखा जाता है, जो विकास स्तर, संसाधनों की उपलब्धता एवं जीवनशैली के अंतर को दर्शाता है।

आयु संरचना के अंतर्गत जनसंख्या को सामान्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है बच्चे (0–14 वर्ष), कार्यशील आयु वर्ग (15–59 वर्ष) एवं वृद्ध (60 वर्ष से अधिक)। इसी प्रकार, लिंगानुपात पुरुष एवं महिला जनसंख्या के अनुपात को दर्शाता है, जबकि साक्षरता दर शिक्षा के स्तर को इंगित करती है। कार्यबल संरचना से यह ज्ञात होता है कि कितनी जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों में संलग्न है।

ग्रामीण क्षेत्रों में परंपरागत जीवनशैली एवं सीमित संसाधनों के कारण जनसंख्या संरचना अपेक्षाकृत असंतुलित होती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के अवसरों के कारण यह अधिक संतुलित एवं गतिशील होती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में आश्रित जनसंख्या :– छतरपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। आश्रित जनसंख्या में मुख्यतः 0–14 वर्ष के बच्चे एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग शामिल होते हैं। 2011 की जनगणना के आधार पर अनुमानित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों का प्रतिशत लगभग 32–35% के बीच पाया गया, जो उच्च जन्म दर का परिणाम है। ग्रामीण समाज में अधिक बच्चों की प्रवृत्ति, परिवार नियोजन के प्रति सीमित जागरूकता एवं सामाजिक परंपराएं इस स्थिति को प्रभावित करती हैं।

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्गों का प्रतिशत भी अपेक्षाकृत अधिक होता जा रहा है, जो लगभग 8–10% के बीच आंका गया है। इसका कारण युवाओं का शहरों की ओर प्रवास है, जिससे गांवों में वृद्धजन का अनुपात बढ़ता है। इस प्रकार, कुल मिलाकर ग्रामीण क्षेत्रों में आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत लगभग 40–45% तक पहुंच जाता है। इससे आश्रित अनुपात अधिक हो जाता है, जिसका अर्थ है कि कार्यशील जनसंख्या पर निर्भर लोगों का बोझ अधिक होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यशील जनसंख्या (15–59 वर्ष) का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम, लगभग 55–60% के बीच होता है। इससे आर्थिक उत्पादकता प्रभावित होती है। आश्रित जनसंख्या अधिक होने के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण जैसी सेवाओं की मांग बढ़ती है, जबकि संसाधनों की कमी के कारण इन सेवाओं की आपूर्ति पर्याप्त नहीं हो पाती। इससे गरीबी एवं विकास की समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

शहरी क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्ग :– छतरपुर जिले के शहरी क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्ग (15–59 वर्ष) का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाया जाता है। 2011 के आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत लगभग 62–68% के बीच आंका गया है, जो ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक है। इसका मुख्य कारण ग्रामीण से शहरी प्रवास है, जिसमें अधिकांश लोग रोजगार की तलाश में कार्यशील आयु वर्ग के होते हैं। युवा वर्ग शहरों में अधिक अवसरों की खोज में आता है, जिससे शहरी क्षेत्रों में उत्पादक जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है।

शहरी क्षेत्रों में बच्चों (0–14 वर्ष) का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम, लगभग 25–28% के बीच पाया जाता है, क्योंकि यहां जन्म दर कम होती है। वहीं वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत भी लगभग 6–8% के बीच रहता है। इस प्रकार, शहरी क्षेत्रों में आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत लगभग 32–35% तक सीमित रहता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम है। इससे आश्रित अनुपात भी कम होता है, जो आर्थिक विकास के लिए अनुकूल स्थिति मानी जाती है।

शहरी क्षेत्रों में कार्यशील जनसंख्या के अधिक होने से आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है। उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र एवं निर्माण कार्य में बड़ी संख्या में लोग संलग्न होते हैं। इससे आय स्तर एवं जीवन स्तर में सुधार होता है। हालांकि, कार्यशील जनसंख्या के अधिक होने से बेरोजगारी एवं प्रतिस्पर्धा की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है। सभी लोगों को पर्याप्त रोजगार उपलब्ध न होने की स्थिति में असमानता एवं सामाजिक तनाव बढ़ सकता है।

इसके अतिरिक्त, शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी भी बढ़ रही है, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है। 2021 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्ग का प्रतिशत बढ़कर लगभग 65–70% तक पहुंच सकता है, जो जनसंख्या संक्रमण के उन्नत चरण को दर्शाता है।

लिंगानुपात एवं साक्षरता दर :– छतरपुर जिले में लिंगानुपात एवं साक्षरता दर के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट अंतर पाया जाता है।

लिंगानुपात :– 2011 की जनगणना के अनुसार छतरपुर जिले का कुल लिंगानुपात लगभग 883 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष था। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अनुपात अपेक्षाकृत बेहतर, लगभग 890–900 के बीच पाया गया, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह कम, लगभग 870–880 के बीच दर्ज किया गया। शहरी क्षेत्रों में कम लिंगानुपात का कारण पुरुष प्रधान प्रवास एवं सामाजिक कारक हो सकते हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में जागरूकता एवं सरकारी प्रयासों के कारण इसमें सुधार के संकेत मिल रहे हैं।

साक्षरता दर :– 2011 में छतरपुर जिले की कुल साक्षरता दर लगभग 64% थी। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर लगभग 58–60% के बीच थी, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह लगभग 75–80% तक पहुंच गई थी।

पुरुष साक्षरता ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 70% एवं महिला साक्षरता लगभग 45–50% थी, जबकि शहरी क्षेत्रों में पुरुष साक्षरता 85% एवं महिला साक्षरता 65–70% तक दर्ज की गई। 2021 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार कुल साक्षरता दर बढ़कर लगभग 70–72% तक पहुंच सकती है, जिसमें शहरी क्षेत्रों में यह 80% तथा ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 65% तक होने का अनुमान है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्रों में साक्षरता एवं लिंग समानता की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों से बेहतर है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा का अभाव एवं सामाजिक बाधाएं अभी भी विकास में अवरोध उत्पन्न करती हैं। अतः जनसंख्या संरचना के इन घटकों आयु, लिंग एवं साक्षरता में सुधार के लिए विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

5. सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

जनसंख्या गत्यात्मकता का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी क्षेत्र में जनसंख्या की वृद्धि, संरचना एवं वितरण सीधे तौर पर वहां की अर्थव्यवस्था, संसाधनों के उपयोग, जीवन स्तर एवं सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। छतरपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के स्वरूप में अंतर होने के कारण इनके सामाजिक–आर्थिक प्रभाव भी भिन्न–भिन्न रूप में देखने को मिलते हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां कृषि मुख्य आजीविका का स्रोत है, वहीं शहरी क्षेत्रों में उद्योग, व्यापार एवं सेवा क्षेत्र का प्रभुत्व है। जनसंख्या वृद्धि एवं प्रवास के कारण इन दोनों क्षेत्रों में संसाधनों पर दबाव, रोजगार की स्थिति, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तथा जीवन स्तर में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार, जनसंख्या गत्यात्मकता के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का अध्ययन क्षेत्रीय असमानताओं को समझने एवं संतुलित विकास की दिशा में नीतिगत निर्णय लेने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक प्रभाव :– छतरपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक संरचना मुख्यतः कृषि आधारित है। अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों जैसे पशुपालन, वनोपज संग्रह आदि पर निर्भर करती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता एक प्रमुख समस्या है। भूमि का विखंडन, सिंचाई की कमी, वर्षा पर निर्भरता एवं आधुनिक कृषि तकनीकों का अभाव उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इससे किसानों की आय कम रहती है और आर्थिक अस्थिरता बनी रहती है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि पर दबाव बढ़ता है, जिससे प्रति व्यक्ति भूमि का आकार घटता जाता है। इससे बेरोजगारी एवं अर्ध–बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की कमी के कारण लोग शहरों की ओर प्रवास करने को मजबूर होते हैं।

सामाजिक दृष्टि से, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का स्तर अपेक्षाकृत निम्न होता है। विद्यालयों एवं स्वास्थ्य केंद्रों की सीमित उपलब्धता के कारण मानव संसाधन का समुचित विकास नहीं हो पाता। विशेष रूप से महिला शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक होती है। गरीबी, अशिक्षा एवं पारंपरिक मान्यताओं के कारण सामाजिक विकास की गति धीमी रहती है। हालांकि, सरकारी योजनाओं जैसे मनरेगा, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रम के माध्यम से कुछ सुधार देखने को मिल रहे हैं। इस प्रकार, ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या गत्यात्मकता का प्रभाव मुख्यतः संसाधनों पर दबाव, आर्थिक अस्थिरता एवं सामाजिक विकास की चुनौतियों के रूप में सामने आता है।

शहरी क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक प्रभाव :– छतरपुर जिले के शहरी क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक संरचना अपेक्षाकृत विकसित एवं विविधतापूर्ण होती है। यहां उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अधिक विकास देखा जाता है।

- ❖ शहरी क्षेत्रों में रोजगार के विभिन्न अवसर उपलब्ध होते हैं। उद्योगों, दुकानों, परिवहन, निर्माण कार्य एवं सेवा क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोग कार्यरत होते हैं। इससे आय स्तर में वृद्धि होती है और जीवन स्तर में सुधार होता है।
- ❖ शिक्षा के क्षेत्र में शहरी क्षेत्रों में विद्यालय, महाविद्यालय एवं तकनीकी संस्थान अधिक संख्या में उपलब्ध होते हैं, जिससे साक्षरता दर उच्च होती है। इससे लोगों में जागरूकता बढ़ती है और सामाजिक विकास को बढ़ावा मिलता है।
- ❖ स्वास्थ्य सुविधाओं की दृष्टि से भी शहरी क्षेत्र अधिक उन्नत होते हैं। अस्पताल, क्लीनिक, विशेषज्ञ चिकित्सक एवं आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता लोगों के स्वास्थ्य स्तर को बेहतर बनाती है। इससे मृत्यु दर कम होती है और जीवन प्रत्याशा बढ़ती है।

हालांकि, शहरी क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक असमानता भी देखने को मिलती है। एक ओर जहां उच्च आय वर्ग के लोग बेहतर सुविधाओं का लाभ उठाते हैं, वहीं निम्न आय वर्ग के लोग सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन करते हैं। शहरीकरण के कारण सांस्कृतिक परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं। पारंपरिक जीवनशैली की जगह आधुनिक जीवनशैली अपनाई जाती है, जिससे सामाजिक संरचना में बदलाव आता है। इसके अतिरिक्त, महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में भागीदारी बढ़ने से सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है।

शहरी चुनौतियाँ

बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव :– छतरपुर जिले के शहरी क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं। यह वृद्धि मुख्यतः ग्रामीण से शहरी प्रवास एवं प्राकृतिक वृद्धि के कारण हो रही है, जिससे शहरों पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है।

- ❖ सबसे प्रमुख समस्या भीड़भाड़ सीमित क्षेत्र में अधिक जनसंख्या के रहने से आवास की समस्या उत्पन्न होती है। लोग छोटे एवं असुविधाजनक घरों में रहने को मजबूर होते हैं, जिससे जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- ❖ आवास समस्या शहरी क्षेत्रों की एक गंभीर चुनौती है। बढ़ती जनसंख्या के कारण मकानों की मांग बढ़ती है, लेकिन आपूर्ति सीमित होती है। इससे झुग्गी–झोपड़ियों का विस्तार होता है, जहां स्वच्छता, पानी एवं बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है।
- ❖ बेरोजगारी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। शहरों में रोजगार के अवसर सीमित होते हैं, जबकि काम की तलाश में आने वाले लोगों की संख्या अधिक होती है। इससे प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और कई लोग बेरोजगार या अर्ध–बेरोजगार रह जाते हैं।
- ❖ परिवहन एवं यातायात समस्या भी बढ़ती जनसंख्या का परिणाम है। सड़कों पर वाहनों की संख्या बढ़ने से जाम, दुर्घटनाएं एवं समय की बर्बादी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।
- ❖ पर्यावरणीय समस्याएं भी गंभीर रूप ले रही हैं। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं ठोस अपशिष्ट का उचित प्रबंधन न होने के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- ❖ जल आपूर्ति एवं स्वच्छता की समस्या भी बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न होती है। सीमित जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव लोगों की दैनिक आवश्यकताओं को प्रभावित करता है।
- ❖ सामाजिक दृष्टि से भी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जैसे अपराध में वृद्धि, सामाजिक असमानता एवं तनावपूर्ण जीवनशैली।

हालांकि, इन चुनौतियों का समाधान उचित शहरी योजना, संसाधनों के कुशल प्रबंधन एवं सतत विकास नीतियों के माध्यम से किया जा सकता है। स्मार्ट सिटी योजना, स्वच्छ भारत मिशन एवं अन्य सरकारी पहल इन समस्याओं को कम करने में सहायक हो सकती हैं। शहरी क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या जहां विकास के अवसर प्रदान करती है, वहीं अनेक जटिल समस्याओं को भी जन्म देती है, जिनका समाधान संतुलित एवं योजनाबद्ध विकास के माध्यम से ही संभव है।

निष्कर्ष

छतरपुर जिले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या गत्यात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों क्षेत्रों के बीच संरचनात्मक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि मुख्यतः उच्च जन्म दर पर आधारित है, जबकि शहरी क्षेत्रों में प्रवासन एक प्रमुख कारक के रूप में उभरकर सामने आता है। इसी प्रकार, मृत्यु दर, साक्षरता, लिंगानुपात एवं कार्यबल संरचना में भी स्पष्ट असमानताएं देखी जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आश्रित जनसंख्या का अनुपात अधिक होने, सीमित संसाधनों एवं कृषि पर निर्भरता के कारण आर्थिक विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रहती है। वहीं, शहरी क्षेत्रों में कार्यशील आयु वर्ग की अधिकता, बेहतर शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण आर्थिक गतिविधियों का विस्तार होता है और जीवन स्तर में सुधार देखने को मिलता है।

प्रवास इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर जनसंख्या के प्रवाह को दर्शाता है। यह प्रवृत्ति जहां शहरी क्षेत्रों में विकास को गति देती है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमबल की कमी एवं सामाजिक असंतुलन उत्पन्न करती है। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास, बेरोजगारी, यातायात एवं पर्यावरणीय समस्याएं भी गंभीर रूप धारण कर रही हैं। छतरपुर जिले में जनसंख्या गत्यात्मकता का स्वरूप परिवर्तनशील है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र धीरे–धीरे जनसंख्या संक्रमण के प्रारंभिक चरण से आगे बढ़ रहे हैं, जबकि शहरी क्षेत्र अपेक्षाकृत उन्नत अवस्था में हैं। इस स्थिति को संतुलित करने के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के अवसरों का विस्तार किया जाए तथा शहरी क्षेत्रों में योजनाबद्ध विकास एवं संसाधनों का कुशल प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए। इससे क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सकेगा और सतत एवं समावेशी विकास को बढ़ावा मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आशा ए. भेंडे एवं तारा कनिटकर – जनसंख्या अध्ययन के सिद्धांत, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, 2011, पृष्ठ संख्या 120–165।
2. आर. एन. सिंह एवं एस. डी. मौर्य – जनसंख्या भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2009, पृष्ठ संख्या 200–250।
3. एस. चंदना – जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ संख्या 90–145।
4. के. सिद्धार्थ एवं एस. मुखर्जी – शहर, नगरीकरण एवं शहरी प्रणाली, पियरसन पब्लिकेशन, 2017, पृष्ठ संख्या 85–140।
5. जनगणना संचालन निदेशालय, मध्य प्रदेश – रिपोर्ट जिला जनगणना पुस्तिकारू छतरपुर, मध्य प्रदेश सरकार, 2011, पृष्ठ संख्या 100–180।
6. जी. टी. ट्रिवार्था – जनसंख्या का भूगोलः विश्व प्रतिरूप, मैकग्रा हिल बुक कंपनी, 1969, पृष्ठ संख्या 150–210।
7. भारत सरकार – रिपोर्ट भारत की जनगणना 2011 (मध्य प्रदेश जिला जनगणना पुस्तिकाः छतरपुर), रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त, भारत, 2011, पृष्ठ संख्या 25–75।
8. मजीद हुसैन – मानव भूगोल, मैकग्रा हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ संख्या 310–360।
9. मध्य प्रदेश सरकार – रिपोर्ट मध्य प्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण, अर्थ एवं सांख्यिकी संचालनालय, भोपाल 2020–21, पृष्ठ संख्या 220–260।
10. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) – रिपोर्ट मानव विकास रिपोर्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2020, पृष्ठ संख्या 45–95।